छलांग

Chhattisgarh Language & Numeracy Gain

विभिन्न प्रचलित योजनाओं के सुचारु संचालन द्वारा उपलब्धि में सुधार का एक प्रयास

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़

- सरकारी स्कूलों को कैसे गुणवत्ता-परक शिक्षा देने हेतु जवाबदेह बनाया जाए ताकि हमारे पालकों को अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजने की आवश्यकता न पड़े ?

- पालकों को अपने बच्चों को मोटी फीस देकर निजी स्कूलों में भेजने के पीछे क्या मजबूरी है ?

- क्या हम समुदाय को विश्वास में लेकर उनके साथ मिलकर अपने सरकारी स्कूलों की छवि नहीं सुधार सकते ?

1. मूलभूत साक्षरता और गणितीय कौशल विकास (Foundational Literacy & Numeracy)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सबसे पहला लक्ष्य है – सभी बच्चों में मूलभूत साक्षरता और गणितीय कौशल का विकास. इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु निपुण भारत अभियान का संचालन किया जा रहा है. इस अभियान के माध्यम से सन 2026-27 तक तीसरी कक्षा के अंत तक प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ने, लिखने एवं अंकगणित को सीखने की क्षमता प्राप्त करनी होगी.

2. असर सर्वे क्या कहता है?

विगत वर्षों में बच्चों के उपलब्धि संबंधी रिपोर्ट का अध्ययन करें तो मूलभूत भाषाई एवं गणितीय कौशलों में विकास बहुत कम या धीमी गति से हुआ है. यदि दस वर्षों के असर रिपोर्ट की ही तुलना करें तो सन 2005 में कक्षा पांच में पढने वाले लगभग 50% बच्चे कक्षा दो का टेक्स्ट पढ़ नहीं पाते थे तो यही स्थिति सन 2014 में भी पाई गयी अर्थात दस वर्षों में आकंड़ों में थोड़ा बहुत ही अंतर आया. अब कोविड की वजह से हमारे आंकड़े और नीचे चले गए हैं. ऐसे में सन 2026-27 अर्थात आज से तीन सत्रों के भीतर हमें एकदम से जो दस वर्षों में नहीं हो पाया, वह आगामी दो से तीन वर्षों के भीतर प्राप्त करने का लक्ष्य दे दिया गया है.

ऐसे में जैसे हम पिछले दस-पन्द्रह वर्षों से करते आए हैं वैसे ही आगे करते रहेंगे तो परिणाम में भी कोई परिवर्तन नहीं आएगा. यदि परिणामों में आशातीत परिवर्तन लाना है तो हमारे परंपरागत तरीकों एवं कार्यशैली में परिवर्तन लाना अत्यावश्यक होगा.

आप देखेंगे कि किसी वर्ष हम खूब मेहनत कर परिणाम में कुछ सुधार ला पाते हैं और फिर फोकस हट जाता है तो हम फिर पीछे चले जाते हैं, अर्थात कुल मिलाकर हम वहीं आसपास आगे-पीछे होते रहते हैं.

ऐसे में क्या हमें हार्ड वर्क की जगह स्मार्ट वर्क को नहीं अपनाना चाहिए. अकेले चना भाड़ नहीं फोड़ सकता. हम सबको मिलकर एक टीम के रूप में प्रयास कर 2026-27 के पहले अर्थात केवल दो तीन वर्षों के भीतर उस लक्ष्य को प्राप्त करना है जो हम पिछले कई वर्षों के कठिन प्रयास के बावजूद नहीं हासिल कर पाए.

इसी बात को ध्यान में रखकर **"छलांग"** कार्यक्रम डिजाइन किया गया है जो कि विभिन्न प्रचलित योजनाओं को सही तरीके से एक टीम के माध्यम से क्रियान्वित करने का एक माध्यम मात्र है.

3. हार्ड-वर्क और स्मार्ट-वर्क

हम बहुत मेहनत करके दैनिक पाठ योजना एवं सहायक सामग्री बनाकर बच्चों को सीखने में सहयोग करने हेतु निरंतर प्रयास करते रहते हैं. हमारे बच्चे कक्षा में अनियमित आने से सीखने की निरंतरता नहीं रहती. आपको बच्चों को पिछली बातें सिखाने में बहुत समय लग जाता है. बहुत से बच्चे अपने पालकों के साथ लंबी अवधि के लिए बाहर पलायन कर जाते हैं. ऐसे में उनकी पढाई को फिर से पटरी पर लाना बहुत मुश्किल काम होता है. हर शिक्षक का उद्देश्य यह होता है कि वे अपनी कक्षा के लिए निर्धारित लक्ष्यों को ध्यान देकर उनमें ही फोकस करें. उन्हें बच्चों को पिछली कक्षाओं एवं स्तरों की दक्षताओं को दुहराने एवं उस पर समय अनावश्यक नष्ट न करना पड़े. ऐसी स्थिति बहुत कम ही बन पाती है. जिनकी कक्षाएं ऐसी होती हैं वे वास्तव में किस्मत वाले होते हैं. ऐसी स्थिति को teaching at right level (TaRL) के नाम से जानते हैं.

तमाम वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यदि हम ऐसी कुछ योजना बनाए कि हमें कम मेहनत कर बेहतर परिणाम प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकें तो हम उसे स्मार्ट वर्क कहेंगे.

इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें प्रचलित योजनाओं को बहुत अच्छे से संचालित करते हुए उनके उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में काम करना है. हमें परीक्षा

एवं मूल्यांकन के दौरान बच्चों का सीखना जारी रखने हेतु विभिन्न नवाचारी प्रयास करने होंगे. इनमें से एक प्रयास है-"पियर लर्निंग" अर्थात बच्चों को एक दूसरे से सीखने हेतु अवसर प्रदान करना.

इसी प्रकार अकेले सभी कार्यों की जिम्मेदारियों को लेने के बदले जवाबदेहियों को बांटने का प्रयास करें. ग्रीष्मावकाश में बच्चों के सीखने की जिम्मेदारी समुदाय के साथ बाँटें. समुदाय के माध्यम से पढी-लिखी माताओं, युवाओं, सेवानिवृत्त व्यक्तियों एवं बड़ी कक्षाओं में पढने वाले विद्यार्थियों को इसकी जिम्मेदारी दी जा सकती है. उन्हें बच्चों को सिखाने के लिए कुछ टिप्स दिया जा सकता है. ग्रीष्मावकाश के दौरान बच्चों को सुबह और शाम उनकी सुविधा से समय का निर्धारण कर खेल-खेल में एवं रोचक गतिविधियों के माध्यम से विभिन्न प्रोजेक्ट्स एवं अन्य चुनौतियां देते हुए उन्हें टीम के रूप में हल करने का अवसर देना चाहिए.

इस प्रकार पियर लर्निंग एवं समर कैम्प के माध्यम से बच्चों को नया सत्र प्रारंभ होने के पूर्व आगामी सौ दिनों तक सीखने-सिखाने की दिशा में सार्थक प्रयास किया जा सकेगा. इसे स्मार्ट तरीके से कर पाने पर हमें अगले सत्र में बच्चों की उपलब्धि में स्पष्ट रूप से छलांग देखने को मिल सकेगा.

4. छलांग कार्यक्रम के उद्देश्य एवं अपेक्षित आउटकम

छलांग कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य माह मार्च अंत से लेकर सत्र प्रारंभ होते तक के समय का सीखने के लिए बेहतर तरीके से प्रबन्धन करना है ताकि बच्चों के विभिन्न कौशलों में स्पष्ट सुधार दिखाई दे सके. कार्यक्रम के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया जाएगा-

- माह अप्रेल में शिक्षकों के टाइम ओन टास्क में वृद्धि करते हुए सीखने हेतु अधिक समय दे पाना
- शिक्षकों को कक्षाओं में पियर लर्निंग प्रविधि के उपयोग को प्रोत्साहित करना
- माह मई एवं जून में समुदाय के सहयोग से बच्चों के सीखने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं कर पाना
- गुणवत्ता सुधार हेतु संचालित विभिन्न योजनाओं को आउटकम आधारित बनाकर परिणाम दे पाना

इस कार्यक्रम के माध्यम से निम्नलिखित आउटकम को प्राप्त करने की अपेक्षा रहेगी-

- विद्यार्थियों को माह अप्रेल में सीखने के लिए पूर्व की तुलना में अधिक समय मिल सकेगा
- माह अप्रेल में शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के साथ पियर लर्निंग पद्धति पर अधिक फोकस होगा
- माह मई-जून में समुदाय की ओर से बच्चों के सीखने के लिए उपयुक्त व्यवस्थाएं की जा सकेंगी
- बच्चों के सीखने के स्तर में दिए गए विशेष इनपुट्स की वजह से बेहतर परिणाम दिखाई से सकेंगे

5. प्रमुख योजनाएं जिन्हें सुचारू ढंग से संचालित करना होगा

वर्तमान ने संचालित इन योजनाओं को ध्यान से सोच-समझकर उनसे अपेक्षित आउटकम को ध्यान में रखते हुए सुचारू ढंग से संचालित करना होगा-

- प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से पियर लर्निंग के विभिन्न तरीकों की समझ बनाना
- शाला में विभिन्न लर्निंग आउटकम के लिए तैयार सहायक शिक्षण सामग्री का निरंतर प्रभावी उपयोग
- शाला परिसर में प्रिंट-रिच वातावरण बनाकर उनका बच्चों के साथ सीखने में नियमित उपयोग
- मुस्कान पुस्तकालय में उपलब्ध स्तर के अनुरूप पुस्तकों का प्रत्येक बच्चे द्वारा नियमित उपयोग
- बच्चों के समझ एवं स्पीड के आकलन के लिए समय समय पर बच्चों के साथ कार्य
- अभ्यास पुस्तिकाओं एवं पाठ्य-पुस्तक पर उपलब्ध अभ्यास कार्य वाले हिस्से पर कार्य
- बच्चों के साथ नियमित सुलेख प्रतियोगिताएं आयोजित कर हस्तलेख सुधारने हेतु कार्य
- मेंटर-मेंटी के माध्यम से वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर योजना बनाकर क्रियान्वयन
- समुदायिक सहभागिता के माध्यम से बच्चों के सीखने में सहयोग लेना
- स्थानीय भाषा में सीखने-सिखाने हेतु उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर समझ बनाना

- बच्चों को खेल-खेल में सीखने की सुविधा देते हुए सीखने में रुचि विकसित कर पाना
- टेक्नोलोजी का उपयोग कर बच्चों के सीखने में सहयोग लेना
- खेलगढ़िया योजना के अंतर्गत उपलब्ध खेल सामग्री के माध्यम से बच्चों को खेलने के अवसर
- सौ दिन सौ कहानियाँ एवं स्टोरीव्हीवर की पुस्तकों का नियमित उपयोग
- सौ दिवसीय पठन एवं गणितीय कौशल विकास हेतु तैयार शिक्षक संदर्शिका पर कार्य

6. छलांग कार्यक्रम के प्रमुख चरण

छलांग कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित करने हेतु निम्नलिखित चरणों में कार्य संपादित करना होगा-

चरण एक: विभिन्न स्तरों में बैठक लेकर कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु रणनीति निर्धारित करना

जिले, विकासखंड एवं संकुल स्तर पर तत्काल विभिन्न समितियों की बैठकों का आयोजन कर इस कार्यक्रम को यथाशीघ्र जमीनी स्तर पर लागू करवाएं. जिले एवं विकासखंड स्तर पर FLN के लिए गठित टास्क फ़ोर्स, प्रशिक्षित मेंटर्स, डाईट के विकासखंड प्रभारियों, सक्रिय शाला प्रबन्धन समिति के सदस्य, जिले को आबंटित NGOs एवं अकादमिक कार्यों में रुचि लेने वाले अन्य सम्माननीय सदस्यों को शामिल करते हुए निम्नलिखित एजेंडा पर निर्णय लेते हुए कार्यक्रम को तत्काल प्रभाव से क्रियान्वित करें-

एजेंडा एक : छलांग कार्यक्रम के संबंध में जानकारी

एजेंडा दो : स्थानीय स्तर पर इस कार्यक्रम की डिजाइन को अंतिम रूप देना

एजेंडा तीन : कार्यक्रम के समय पर एवं प्रभावी संचालन हेतु विभिन्न स्तरों पर जवाबदेहियाँ

एजेंडा चार : कार्यक्रम के क्रियान्वयन के संबंध में प्रभावी निरीक्षण एवं ट्रेकिंग व्यवस्था

चरण दो: स्कूलों में टाइम ओन टास्क में सुधार एवं पियर लर्निंग को बढ़ावा देना

माह मार्च एवं अप्रेल में अधिकांश शिक्षकों द्वारा सर्वे में यह जानकारी दी गयी है कि उनका अधिकांश समय परीक्षाओं के आयोजन एवं उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में व्यतीत होता है. वे बच्चों की पढाई पर उतना ध्यान नहीं दे पाते. इस दौरान उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यदि हम पियर लर्निंग तकनीक को अपना लें तो बच्चे अपने आप एक दूसरे से सीखने में सहयोग कर सकेंगे और सीखना भी पूर्व की तुलना में स्थाई हो सकेगा. इस हेतु शाला स्तर पर निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए तत्काल आवश्यक कार्यवाही करें-

- शिक्षकों को अपने टाइम आन टास्क को बढाने के लिए तत्काल उपाय करते हुए अपना अधिकतम समय स्मार्ट तरीके से बच्चों को सक्रिय रखने हेतु करना होगा
- शिक्षकों को यह देखना होगा कि कैसे उनकी अनुपस्थिति में भी बच्चे सीखने संबंधी कार्यों में सक्रिय रह सकें, अभ्यास करे
- शिक्षकों को अपनी कक्षा में पियर लर्निंग अपनाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का उपयोग किया जा सकता है-

1. बच्चों को अलग-अलग लर्निंग आउटकम देकर उन्हें उन बिन्दुओं पर अच्छे से तैयारी कर साथियों को उन मुद्दों को सिखाने एवं समझ बनाने की जिम्मेदारी दी जाकर
2. बड़ी कक्षा के बच्चों को अपने से छोटी कक्षा के बच्चों को सिखाने की जिम्मेदारी देकर
3. बच्चों को छोटे-छोटे समूह में बैठकर कुछ विशिष्ट मुद्दों पर अपनी समझ बनाने के लिए समय देकर फिर समझ बनने पर दो-दो बच्चों के समूह बनाकर एक दूसरे को अपने समूह में सीखी गयी बात को सिखाना. उदाहरण के लिए मान लीजिये यदि किसी कक्षा में पच्चीस बच्चे हैं तो पांच-पांच के समूह बनाकर एक समूह को बडा-छोटा, एक समूह को मोटा-पतला, एक समूह को कम-ज्यादा, एक समूह को दूर-पास और पांचवे समूह को हल्का-भारी पर समझ बनाने का कार्य देते हुए उन्हें इस पर तैयारी करने के लिए

पर्याप्त समय देवें. अब अलग-अलग समूह से दो दो बच्चों की जोड़ी इस प्रकार बनाएं कि वे एक दूसरे को अपने समूह में सीखी गयी दक्षता को समझा और सिखा सके. ऐसे जोड़े तब तक बनाए जब तक प्रत्येक बच्चा शेष चार दक्षताओं पर अपने साथी के सहयोग से समझ न बना लें. (जिगसा विधि)

4. उपरोक्त उदाहरण को एक अन्य तरीके से भी आयोजित किया जा सकता है. इसमें उक्त पाँचों बिन्दुओं को सीखने के लिए अलग अलग स्थान तय कर उन्हें लर्निंग स्टेशन का नाम देवें. इन स्टेशन में उक्त दक्षताओं को हासिल कर चुके दो दो बच्चों को कुछ तैयारी के साथ बिठाएं. शेष बच्चों को दर्ज संख्या के अनुसार छोटे-छोटे समूह में बांटकर एक स्टेशन से अगले स्टेशन में एक निश्चित अंतराल के बाद भेजना तय करें. इससे निर्धारित कम समय में बच्चे अधिक से अधिक सीखने हेतु तत्पर हो सकेंगे (लर्निंग स्टेशन)

5. शिक्षकों के व्यस्त होने पर वे बच्चों को विभिन्न टास्क दे सकते हैं, आपको विगत वर्षों में आमाराईट परियोजना के अंतर्गत बच्चों द्वारा किए जाने योग्य बहुत से परियोजनाओं के उदाहरण दिए गए थे. बच्चों को छोटे-छोटे समूह में ऐसे कार्य देते हुए उद्देश्यपरक सीखने में सक्रिय रखा जा सकता है. (meaningful engagement)

6. बच्चों को प्रदत्त अभ्यास पुस्तिकाओं एवं उनके पाठ्यपुस्तकों में दिए गए विभिन्न अभ्यास कार्यों को भी इस अवधि में करवाया जा सकता है

7. कुछ बड़ी कक्षाओं में बच्चों को वाद-विवाद, ब्रेन-स्टोर्मिंग, रोल प्ले, अनुभव-आधारित सीखना और लेखन कार्य करने के अवसर देते हुए सीखने हेतु सक्रिय रखा जा सकता है

8. और सबसे महत्वपूर्ण, आप जब अन्य कार्यों में व्यस्त हों तब बच्चों को अपने मुस्कान पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर उनका अध्ययन करने का अवसर देवें. जिन बच्चों को पढ़ना नहीं आता है उनकी जोड़ी पढना आने वाले बच्चों के साथ बनाए, जिन्हें अटक-अटक कर पढ़ना आता है, उन्हें जोड़ी में बैठकर बिना अटके पढने का अभ्यास करवाएं.

चरण तीन: छलांग केन्द्रों की खोज एवं संसाधन सुलभता की मैपिंग

स्थानीय स्तर पर बच्चों का सीखना जारी रखने हेतु समुदाय को मिलकर आपसी सहमति से सुरक्षित सीखने के केंद्र की पहचान कर समुचित व्यवस्थाएं करनी होगी. यदि शाला प्रबन्धन समिति उचित समझे तो शाला परिसर में भी छलांग केंद्र की व्यवस्था कर सकती है. समुदाय को इस बात से अवगत करवाएं कि उनके बच्चों के सीखने के लिए पूरी सुरक्षा के साथ-साथ सीखने-सिखाने का बेहतर वातावरण भी मिलना चाहिए. समुदाय के सहयोग से इन कक्षाओं के संचालन हेतु शाला को निम्नलिखित संसाधन सहयोग देने की अपेक्षा रहेगी-

- मुस्कान पुस्तकालय की पुस्तकों को बच्चों को नियमित रोटेशन में पढने के लिए उपलब्ध करवाना
- पूर्व के वर्षों में शालाओं को प्रदत्त विभिन्न पठन सामग्री जैसे गढ़बो नवा भविष्य, पालकों के लिए पुस्तिका, बिग बुक्स, सीढी, वर्णमाला चार्ट, वर्णमाला पुस्तिका, चित्र कहानियाँ, पोस्टर, टी एल एम किट एवं अन्य अभ्यास सामग्री
- बच्चों के उपयोग हेतु श्यामपट, आवश्यक स्टेशनरी, रंगीन पेन, चाक-डस्टर, नोटबुक, स्लेट-पेन्सिल आदि
- शाला अनुदान से प्राप्त शेष राशि से आवश्यक संसाधन सुविधाएं ताकि वह बजट लैप्स न हो जाए

बच्चों में पूरी रुचि लेते हुए निरंतर सीखते रहने की प्रवृत्ति विकसित करने हेतु किस प्रकार के प्रयासों, रणनीतियों की आवश्यकता होगी, इस पर चिंतन करें !

चरण चार: छलांग केन्द्रों में सुविधादाताओं का क्षमता विकास

आप सभी ने अपने अपने क्षेत्र में कोरोना के दौरान समुदाय को सक्रिय रखते हुए उनके सहयोग से बच्चों का सीखना-सिखाना जारी रखने में सफलता पाई थी. कोरोना के दौरान मिली सीख को नही भूलते हुए उसके अनुभव के लाभ को आगे भी लेकर जाना चाहिए. आपको अपने क्षेत्र में समुदाय के सहयोग के निम्नलिखित स्तर मिलेंगे-

स्तर एक- बिना आपके पहल किए ही वे अपने समुदाय के बच्चों को सीखने हेतु आवश्यक व्यवस्था अपने स्तर पर पहले से ही कर लेंगे. यहाँ बच्चों को सीखने में सहयोग देने सेवानिवृत्त शिक्षक, व्यक्ति या स्थानीय शिक्षक आसानी से उपलब्ध हो जाएंगे. उन्हें प्रोत्साहित कर आवश्यक संसाधन एवं मार्गदर्शन दिए जाने की आवश्यकता होगी

स्तर दो- आपको ऐसे क्षेत्र में थोड़ी पहल करने, निर्देश आदि जारी कर निरंतर फोलो-अप लेने पर वहां के समुदाय द्वारा ऐसे लोगों की पहचान की जाएगी जो इस पुण्य कार्य में स्वेच्छा से सहयोग देने सामने आ सकें. ऐसे क्षेत्र में बड़ी कक्षाओं में अध्ययन कर रहे विद्यार्थी, बेरोजगार युवा, माताओं की सेवाएं थोड़े प्रयास से उपलब्ध करवाई जा सकती है. इनका चयन कर उन्हें जिम्मेदारी देते हुए इनके साथ कुछ दिनों तक नजदीकी से काम कर इनका क्षमता विकास करते हुए स्कूल खुलते तक क्या क्या सिखा लेना चाहिए, इस पर लक्ष्य निर्धारित कर जिम्मेदारी देते हुए अवकाश के दौरान समय समय पर फोलो-अप लिया जाना चाहिए.

स्तर तीन- सुदूर अंचलों में जहां शिक्षा की अलख नहीं जगी है वहां बच्चों को ग्रीष्मावकाश के दौरान सीखने में सहयोग करने समुदाय से अपेक्षित सहयोग मिलना मुश्किल है. ऐसे क्षेत्र में अंगना म शिक्षा की भाँति माताओं या आंगनबाडी कार्यकर्ताओं या आसपास के गाँव के इच्छुक व्यक्तियों से सहयोग लेने का प्रयास करना होगा. बच्चों को आमराईट जैसी परियोजना या अभ्यास पुस्तिकाएं देते हुए उन पर काम करवाते हुए संकुल समन्वयक या किसी अन्य स्तर से ट्रेक करने की व्यवस्था करनी होगी.

उपरोक्त तीनों स्तर को ध्यान में रखते हुए अपने विकासखंड के प्रत्येक संकुल, प्रत्येक बसाहट में बच्चों का सीखना जारी रखे जाने हेतु एक ब्लू-प्रिंट तैयार कर उसका रिकार्ड तैयार करें ताकि माह मई और जून में समुदाय द्वारा सीखने हेतु कुशल नेतृत्व प्रदाय किया जा सके. प्रतिदिन के गतिविधि की ट्रेकिंग हेतु

जिम्मदारी देते हुए विभिन्न स्तरों से सपोर्टिव सुपरविजन का कार्य निरंतर जारी रखें, अपने पूरे अमले को इस कार्य में लगाएं ताकि बेहतर परिणाम मिल सके.

सभी स्तर पर चयनित एवं इच्छुक सुविधादाताओं के क्षमता विकास के लिए स्थानीय स्तर पर गठित सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का सहयोग लेवें. मुख्य रूप से इन सुविधादाताओं को बच्चों में मूलभूत दक्षताओं के विकास पर फोकस कर एक दूसरे से सीखने हेतु दक्ष एवं प्रेरित करते हुए तैयार करना होगा.

समुदाय से बच्चों को सीखने में सहयोग देने हेतु तत्पर लोग बहुत मुश्किल से मिलते हैं. ऐसे शिक्षा में सहयोगी साथियों का निरंतर क्षमता विकास एवं इस कार्य में उन्हें जोड़े रखने हेतु स्थानीय स्तर पर क्या-क्या करना चाहिए ?

चरण पांच: छलांग केन्द्रों में सीखना-सिखाना

छलांग केन्द्रों में बच्चों के सीखने-सिखाने में मुख्य फोकस आपस में गतिविधियों, खेल-खेल में सीखने एवं छोटे-छोटे समूह विशेषकर दो-दो के समूह में बैठकर सीखने एवं गतिविधि करने पर जोर देना होगा.

अवकाश के दौरान सीखने-सिखाने की पूरी जिम्मेदारी समुदाय को लेने का अवसर देते हुए शिक्षकों को इस कार्य से मुक्त रखा जा सकता है. वे बस यह सुनिश्चित कर लेवें कि उनके क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य सुचारू ढंग से संचालित हो रहा है-

- आवश्यकता अनुसार पहले उसी कक्षा के महत्वपूर्ण लर्निंग आउटकम पर पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से अभ्यास कार्य
- अभ्यास पुस्तिकाओं पर पुनः कार्य करवाते हुए उन्हें वर्तमान कक्षाओं के लर्निंग आउटकम पर सक्षम बनाते हुए नींव मजबूत करना
- कुछ अभ्यास के बाद बड़ी कक्षाओं के बच्चों की उपयोग की गयी पाठ्यपुस्तकों को पिछली कक्षा के बच्चों को देकर उन्हें तैयार करना
- कुछ मूलभूत दक्षताओं जैसे भाषा में पठन कौशल, समझ के साथ पठन, स्पीड के साथ पठन एवं लेखन कौशल पर खूब अभ्यास करवाना होगा

- इसी प्रकार गणित में गिनती, जोड़-घटाव-गुणा-भाग जैसे अवधारणाओं पर कार्य करते हुए उनका बेस तैयार करना होगा. उनके साथ मौखिक गणित पर भी इस दौरान अभ्यास करवाया जाना चाहिए
- विभिन्न कक्षाओं में अपेक्षित दक्षताओं को अगली कक्षा में जाने से पहले अच्छे से हासिल कर उनमें प्रत्येक बच्चे को दक्ष करना होगा
- इस दौरान हम आंगनबाडी में पढ़ रहे बच्चों के साथ भी कार्य करते हुए उन्हें बालवाडी एवं कक्षा पहली के स्तर तक लाने का प्रयास करना होगा
- हमें अपने अपने क्षेत्र में इस अवसर का लाभ उठाते हुए शाला से बाहर के बच्चों को भी इस दौरान मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास करना होगा ताकि अगले सत्र में उन्हें नियमित कक्षा में प्रवेश दिया जा सके
- बच्चों के इन केन्द्रों में नियमित उपस्थिति हेतु नियमित रूप से खेल एवं मनोरंजन संबंधी गतिविधियों का आयोजन भी करें

इन केन्द्रों में सीखना-सिखाना हमारे स्कूलों में आयोजित होने वाले सीखने-

सिखाने से किस प्रकार से भिन्न होना चाहिए ? कैसे हम अधिक से अधिक बच्चों को इन केन्द्रों में नियमित आकर सीखने हेतु प्रेरित कर सकते हैं, मिलकर विचार कर स्थानीय स्तर पर इसका हल निकालने का प्रयास करें !

चरण छह: छलांग केन्द्रों में निरीक्षण

छलांग केन्द्रों में सीखने-सिखाने की गतिविधियों के नियमित संचालन के लिए मुख्य रूप से शाला प्रबन्धन समिति के सदस्यों को जिम्मेदारी दी जाएगी. उन्हें इस प्रकार से तैयार किया जाएगा कि वे इन केन्द्रों के निरीक्षण के लिए बारी-बारी से जिम्मेदारी ले सकें. माताओं को भी इन केन्द्रों के संचालन में आवश्यक सहयोग देने एवं निरीक्षण की जवाबदेही दी जा सकेगी.

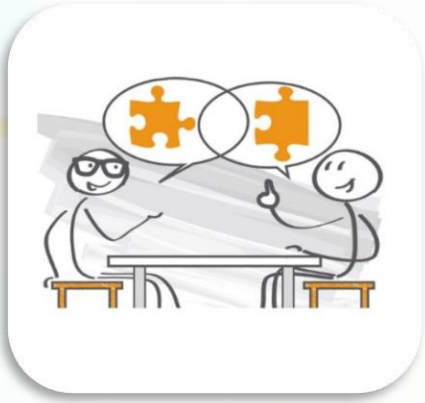

विभाग की ओर से इन केन्द्रों के संचालन के नियमित निरीक्षण हेतु शाला संकुल प्राचार्यों को जिम्मेदारी दी जाएगी. उनके द्वारा संकुल समन्वयकों, स्थानीय स्तर पर निवास कर रहे शिक्षकों, अन्य विभागों के स्थानीय प्रतिनिधियों, शाला संकुल के अन्य अकादमिक स्टाफ आदि को क्षेत्र बाँट कर उनके क्षेत्रों में संचालन में सहयोग देने हेतु सपोर्टिव सुपरविजन के लिए अधिकृत किया जाना होगा.

सपोर्टिव सुपरविजन का अर्थ केन्द्रों का इस प्रकार से निरीक्षण करना है जिसमें खामियों को ढूंढकर दोष देने के बदले उन कमियों की मिलकर पहचान कर सुधार हेतु टीम के रूप में प्रयास करें.

शाला प्रबन्धन समिति के सदस्यों के इन कक्षाओं के निरीक्षण के संबंध में जानकारी को विभागीय माध्यम से एकत्र कर संकलित एवं विश्लेषण का कार्य विकासखंड स्तर पर किया जा सकेगा.

सीखने के केन्द्रों के नियमित संचालन हेतु निरीक्षण के लिए ये चार मुख्य रूप से जवाबदेह होंगे-

- शाला प्रबन्धन समिति के सदस्य
- अंगना म शिक्षा से जुडी सक्रिय माताएं
- चुने गए जन-प्रतिनिधिगण
- शाला संकुल प्राचार्य द्वारा अधिकृत अधिकारी

ये सभी मिलकर केंद्र के बेहतर संचालन में सहयोग करने हेतु सपोर्टिव सुपरविजन करेंगे !

सपोर्टिव सुपरविजन में निरीक्षणकर्ता एवं क्रियान्वयन करने वाले दोनों मिलकर आपस में चर्चा कर कार्यक्रम के उद्देश्य अनुरूप आउटकम की प्राप्ति से संबंधित वस्तुस्थिति पर चर्चा करते हैं और खामियां खोजने के बदले सुधार के लिए निरंतर प्रयास करते हैं !

7. छलांग केन्द्र के नियमित निरीक्षण हेतु प्रपत्र का प्रारूप

इस योजना के सुचारु संचालन हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर फोकस कर निरीक्षण करना होगा-

i. केंद्र का विवरण

अ. बसाहट का नाम:
आ. स्कूल का नाम जहां से बच्चे इस केंद्र में आते हैं:
इ. स्कूल का यू-डाईस कोड:
ई. संकुल स्रोत केंद्र:
उ. विकासखंड:
ऊ. जिला:

ii. केंद्र में कक्षावार कुल दर्ज बच्चे एवं निरीक्षण के दिन उपस्थिति

कक्षा	केंद्र में कुल दर्ज बच्चे	निरीक्षण के दिवस उपस्थित बच्चे

iii. केंद्र में सहयोग कर रहे सुविधादाता का नाम एवं मोबाइल नंबर:
iv. सुविधादाता का विवरण: सेवानिवृत्त शिक्षक/ बेरोजगार युवा/ बडी कक्षा के विद्यार्थी/ माता/ अन्य
v. केंद्र में सीखने हेतु उपलब्ध संसाधनों का विवरण:
vi. क्या सुविधादाता का उन्मुखीकरण शिक्षक द्वारा किया गया है?
vii. क्या संबंधित शिक्षक सुविधादाता के संपर्क में हैं ?
viii. क्या शाला प्रबन्धन समिति के सदस्य नियमित रूप से निरीक्षण में आते हैं?
ix. विभाग की ओर से अभी तक निरीक्षण में कौन-कौन अधिकारी आए हैं?
x. निरीक्षणकर्ता के अनुसार बच्चों के सीखने की स्थिति:
अ. बच्चे जोड़ी में बैठकर सीखने में सक्रिय दिखाई दे रहे हैं ?
आ. बच्चों के पास सीखने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध है?
इ. शिक्षक के पास सिखाने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध है?
ई. बच्चे भाषा की मूलभूत दक्षताओं में बेहतर प्रदर्शन कर पा रहे हैं?
उ. बच्चे गणित की मूलभूत दक्षताओं में बेहतर प्रदर्शन कर पा रहे हैं?
ऊ. बच्चों को केंद्र में सीखने में मजा आ रहा है?

निरीक्षणकर्ता के हस्ताक्षर

छलांग
(Chalang- Chhattisgarh Literacy & Numeracy Gain) कार्यक्रम

"एक बच्चे को पालने के लिए पूरे एक गाँव की जरूरत होती है!"
"It takes a whole village to raise a child!"

स्कूली शिक्षा में प्रचलित विभिन्न योजनाओं को अपने बसाहट में सफलतापूर्वक क्रियान्वित करते हुए FLN के लक्ष्यों को यथाशीघ्र प्राप्त करने हेतु एक छलांग लगाने हेतु समुदाय के नेतृत्व में संचालित कार्यक्रम **-छलांग**

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सभी बच्चों में कक्षा तीन तक की मूलभूत भाषाई एवं गणितीय कौशल सन 2026-27 तक हासिल करने पर फोकस किया गया है
- अभी पांच वर्ष स्कूल में बिताने के बाद भी हमारे बहुत से बच्चे वर्ण, शब्द एवं वाक्य पढ़ना नहीं जानते
- कक्षा तीन तक के लगभग 30-40% बच्चों को 1 से 99 तक की गिनती भी नहीं आती
- जब उन्हें गिनती ही नहीं आती तो वे जोड़-घटाने का सवाल हल नहीं कर पाते
- जब अधिकांश को पढ़ना ही नहीं आता तो वे इबारती सवालों को समझ ही नहीं पाते

	कक्षा तीन को आधार माना गया है जहां तक हमें बच्चों को पढ़ना सिखा लेना चाहिए ताकि उसके बाद वह पढ़कर सीख सके (learn to read and then read to learn)
जो बच्चे शुरुआती दौर में मूलभूत दक्षताएं हासिल नहीं कर पाते उनके आगे शाला त्याग होने की संभावना बढ़ जाती हैं क्योंकि आगे की कक्षाओं में उन्हें कुछ समझ में नहीं आता	